जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

कल्याणकारक कार्यों में विघ्न बहुत आते हैं - यह नियम आज का नहीं अनादि का है।

- सूक्तिसंग्रह, पृष्ठ-34

वर्ष : 25, अंक: 4 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (द्वितीय) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. अनुभवप्रकाश जैन एवं पं. संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भगवान महावीर के अहिंसा एवं भाईचारे के सिद्धान्त को विश्वभर में फैलाना है, जैनसमाज महोत्सव के कार्यक्रम जारी रखे

- प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी

नई दिल्ली : भगवान महावीर 2600वाँ जन्म कल्याणक समापन समारोह, महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर 25 अप्रैल 2002 को, सायंकाल 6.30 बजे सीरी फोर्ट आडिटोरियम, नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने भाग लिया। गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी, वित्तमंत्री श्री यशवंत सिन्हा विशिष्ट अतिथि के रूप में थे। समारोह की अध्यक्षता पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जगमोहनजी ने की। केन्द्रीय कपड़ा राज्यमंत्री श्री धनन्जयकुमार, संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री गोपालास्वामी तथा डॉ. एल. एम. सिंघवी भी समारोह में विशेष आमंत्रित थे।

इसी भव्य एवं ऐतिहासिक समारोह में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी बाजपेयी ने भारत सरकार द्वारा जारी 100 रुपये के स्मृति सिक्कों एवं 5 रुपये के प्रचलन सिक्कों का लोकार्पण किया। साथ ही प्रधानमंत्रीजी ने पंजाब सरकार के स्वर्ण एवं रजत मेडेलियन का भी लोकार्पण किया।

प्रधानमंत्रीजी ने आव्हान किया कि भगवान महावीर का अहिंसा, करुणा, प्रेम और भाईचारे का संदेश हमें विश्वभर में फैलाना है। इस समारोह को समापन न मानकर भगवान महावीर के दर्शन व सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की शृंखला आगे भी जारी रहनी चाहिये। प्रधानमंत्री ने कहा कि अनेकता में एकता का संदेश देनेवाला भगवान महावीर का अनेकान्तवाद ही हमें भटकाव से बचा सकता है।

महोत्सव के भव्य समापन समारोह का यह आयोजन केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय तथा भगवान महावीर 2600 वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव महासमिति द्वारा किया गया। विशाल संख्या में जैन समाज व समाज के प्रमुख व्यक्तित्व समारोह में उपस्थित थे। प्रधानमंत्री ने इस प्रसंग पर डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी द्वारा लिखित 'भारत एवं विदेशों के जैन मन्दिर' पर एक सचित्र पुस्तक का विमोचन किया।

प्रधानमंत्री ने आगे बोलते हुये कहा कि आज से 2600 वर्ष पूर्व की कल्पना कीजिये जब भगवान महावीर ने अहिंसा एवं अनेकान्त का दर्शन दिया, जिसमें धर्मनिरपेक्षता, सह-अस्तित्व एवं सहिष्णुता का पाठ था। उनके सिद्धांतों में बलप्रयोग का कोई स्थान नहीं था; बल्कि आत्मिकबल की महत्ता थी। अनेकता में एकता ही सच्ची धर्मनिरपेक्षता है।

भगवान महावीर का अहिंसा, अनेकान्त व सहिष्णुता का दर्शन धर्मनिरपेक्षता का दर्शन है, जो हमारे पूर्वज हजारों साल पहले हमें सिखा गये हैं। हमें इसे कारगररूप से अमल में लाना है। आत्मचिन्तन की मुद्रा में उन्होंने विश्व के जैनमन्दिरों का उल्लेख किया कि ये कलात्मक मंदिर हमें शताब्दियों से मानवता का संदेश दे रहे हैं। ये मंदिर कैसे बने, कैसे इनकी रक्षा हुई, सभी इनका दर्शन करें, महावीर का मानवता का संदेश 'दुनिया भर में फैले' यही हम चाहते हैं।

स्वागत भाषण करते हुये महासमिति की कार्याध्यक्षा श्रीमती इन्दु जैन ने जैनधर्म की आधारभूत देन ह्न अहिंसा, अनेकान्त, धर्मनिरपेक्षवाद एवं पर्यावरण-संरक्षण पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अहिंसा एवं अनेकान्त से बड़ा कोई धर्म नहीं है जो सभी जीवों को जीने का समान अधिकार व दूसरों के मत को सम्मान देना सिखाता है।

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने इस बात पर बल दिया कि महावीर के संदेश की आज की हिंसक परिस्थितियों में अधिक आवश्यकता एवं सार्थकता है। श्री आडवाणी ने गुजरात का उल्लेख करते हुये कहा कि यही सही वक्त है, जब भगवान महावीर के अहिंसावाद की सख्त जरूरत है।

केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री यशवंत सिन्हा ने भारत की अर्थव्यवस्था में जैनसमाज के महत्त्वपूर्ण योगदान की सराहना की और इस बात पर बल दिया कि इस समुदाय के योगदान को रेखांकित किये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मैं जैनपरिवार में तो नहीं जन्मा हूँ; किन्तु मुझे गर्व है कि मैं उस राज्य में जन्मा जो भगवान महावीर की जन्म एवं कर्म भूमि है।

केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जगमोहन ने बताया कि उनके मंत्रालय ने देशभर में जैनमंदिरों, तीर्थों, स्थापत्य-स्मारकों एवं पुरा-स्थलों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिये 81 कार्य-योजनायें प्रारंभ की हैं; एतदर्थ 51 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की गई है।

मंच पर आसीन सभी अतिथियों का स्वागत श्री श्रेणिक कस्तूरभाई, साहू रमेशचन्द्र जैन, श्री मांगीलाल सेठिया एवं श्री जे.डी. जैन ने पुष्पांजलि भेंट कर किया। कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती सरला महेश्वरी (दूरदर्शन) ने किया।

अन्त में महासमिति के महामंत्री श्री एल.एल. आच्छा ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित समाज के प्रति आभार व्यक्त करते हुये भगवान महावीर 2600 वाँ जन्मकल्याण महोत्सव को राष्ट्रीय-स्तर पर आयोजित करने के लिये प्रधानमंत्री के प्रति विशेष कृतज्ञता ज्ञापित की।

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन 6

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

भूत, भविष्य और वर्तमानरूप तीनप्रकार के समय का कारण होने से वे कालाणु तीन प्रकार के माने गये हैं और अनंत समयों के उत्पादक होने से अनन्त भी कहे जाते हैं। उन कारणभूत कालाणुओं से समय की उत्पत्ति होती है।

उन उपादान के कारणभूत कालाणुओं से ही समय की उत्पत्ति होती है। कार्य की उत्पत्ति में मुख्य कारण उपादान है, सहकारी कारण के रूप में भिन्न जाति के द्रव्य को भी व्यवहार से निमित्त की अपेक्षा से कारण कहा जाता है। समय, आवली, उच्छ्वास, प्राण, स्तोक और लव आदि को आचार्यों ने व्यवहार काल कहा है।

'समय' की व्याख्या में कहा गया है कि – सर्वजघन्य गति परिणाम को प्राप्त हुआ परमाणु जितने समय में अपने द्वारा प्राप्त आकाश प्रदेश को लांघता है, उतने काल को समय कहा गया है। यह समय काल द्रव्य का सबसे छोटा समय है, अत: यह अविभागी होता है। असंख्यात समय की एक आवली होती है। असंख्यात आवलियों का एक उच्छ्वास–निश्वास होता है। दो उच्छ्वास–निश्वासों का एक प्राण होता है। सात प्राणों का एक स्तोक और सात स्तोकों का एक लव होता है। सत्तर लवों का एक मुहूर्त होता है और तीस मुहूर्तों का एक दिन–रात होता है।

दिन–रात के पश्चात् व्यवहार कालद्रव्य को ऋतु, अयन, युग, पूर्वांग, पूर्व, नियुतांग, नियुत, कुमुदांग, कुमुद, पद्मांग, पद्म, नलिनांग, नलिन, कमलांग, कमल, तुटयांग, तुटय, अटटांग, अटट, अममांग, अमग, उहांग, उह, लतांग, लता, महालतांग, महालता, शिरप्रकंपित, प्रहेलिका, चचिका आदि नामों से तो संख्यात काल की चर्चा है।

ज्ञातव्य है कि यह काल भी असंख्यवत् ही है।

इसके बाद जो काल वर्षों की संख्या से अतीत है, संख्यातीत है; वह असंख्येय व्यवहारकाल माना जाता है। इसके भी पल्य, सागर, कल्प तथा अनन्त आदि अनेक भेद हैं।

इसप्रकार इस सर्ग में प्रारंभ के 31 श्लोकों में उपर्युक्त विस्तृत चर्चा है।

इसी सर्ग के श्लोक 32 से परमाणु की परिभाषा एवं उसके स्कन्धों के नामों की विशेष चर्चा की गई है।

जो आदि–मध्य और अन्त से रहित हैं, निर्विभाग हैं और मूर्त होने पर भी अप्रदेश–द्वितीयादिक प्रदेशों से रहित हैं, उसे परमाणु कहते हैं। वह परमाणु एक काल में एक रस, एक वर्ण, एक गंध और परस्पर में बाधा नहीं करनेवाले दो (अविरोधी) स्पर्शों को धारण करता है, अभेद्य है, शब्द का कारण है और स्वयं शब्दरहित है।

यहाँ आचार्य कहते हैं कि – एक परमाणु का एक समय में आकाश के रस, वर्ण, गंध, स्पर्श और शब्द के छह अंशों के साथ सम्बन्ध होने से परमाणु में षडंशता है – ऐसी शंका नहीं करना चाहिये; क्योंकि ऐसा मानने पर आकाश के छोटे–छोटे छह अंश और एक परमाणु – इस तरह सब मिलकर सप्तांश हो जायेंगे, जो वस्तु स्वरूप में संभव नहीं है; अत: परमाणु को षडंशता नहीं है।

पुनश्च परमाणु रूप, रस, गंध और स्पर्श द्वारा पूरण–गलन करते रहते हैं, उनमें उत्पाद–व्यय होता रहता है; इसलिये स्कन्ध के समान परमाणु भी पुद्गल द्रव्य है। अनन्तानन्त परमाणुओं के समूह को अवसंज्ञक कहते हैं। ये अवसंज्ञक आदि स्कन्ध की ही जातियाँ हैं। इन स्कन्धों के भी संख्या की अपेक्षा अनेक नाम हैं, जो इसप्रकार हैं –

आठ अवसंज्ञाओं की एक संज्ञा–संज्ञा, आठ संज्ञा–संज्ञाओं का एक त्रुटिरेणु, आठ त्रुटिरेणु का एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणु का एक रथरेणु, आठ रथरेणु का एक उत्तम भोगभूमि मनुष्य के बाल का अग्रभाग (नांक) के बराबर का सकन्ध होता है।

इसीप्रकार आठ–आठ के मध्यम भोगभूमि, जघन्य भोगभूमि के फिर कर्मभूमिज मनुष्यों के आठ बालाग्रों की एक लीख,आठ लीखों का एक जूँआ, आठ जुँओं का एक जौ और आठ जौ का एक उत्सेधांगुल होता है। इसी उत्सेध–अंगुल से जीवों के शरीर की ऊँचाई और छोटी वस्तुओं का प्रमाण ग्रहण किया जाता है।

इसप्रकार और भी विस्तृत चर्चा परमाणु एवं स्कन्धों के छोटे–बड़े मापों की इस सर्ग में है। इसमें योजन, व्यवहारपल्य, उद्धारपल्य, उद्धारसागर, अद्धसागर, अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी कल्प–काल आदि का वर्णन है। यह सब कथन प्रारम्भ से 63 श्लोकों में है। इस सर्ग में कुल श्लोक 178 हैं। श्लोक 63 से आगे 129 तक भरत एवं ऐरावत क्षेत्र की भोगभूमि सम्बन्धी जानकारी दी गई है। 122 वें श्लोक से लेकर कुलकरों की चर्चा है।

यहाँ कहा गया है कि ह्न सुख के कारणभूत प्रारंभ के दो काल 'सुखमा–सुखमा' और 'सुखमा' बीत गये और पल्य के आठवें भाग बराबर तीसराह्न 'सुखमा–दुखमा' काल बाकी रह गया तथा कल्पवृक्ष जो पहले अधिक मात्रा में थे, क्रम–क्रम से कम होने लगे, तब इस क्षेत्र में कुलकरों की उत्पत्ति हुई।

जैन भूगोल के अनुसार जम्बूद्वीप के दक्षिण में जो गंगा–सिन्धु के बीच भरतक्षेत्र है, वहाँ चौदह कुलकर हुये, उनमें पहला कुलकर प्रतिश्रुत था। यह प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी पूर्वभव के स्मरण से सहित था। उसके समय प्रजा को अकस्मात् पूर्णमासी के दिन प्रथमबार आकाश में एकसाथ दो चमकते हुये बिम्ब दिखाई दिये। उन्हें देख प्रजा के लोग अपने ऊपर आये भयंकर उत्पात की आशंका से भयभीत हो उठे तथा सभी प्रजा प्रतिश्रुत कुलकर की शरण में आ गई। तब प्रतिश्रुत ने कहा – आप लोग भयभीत न हों। ये पश्चिम में सूर्यमण्डल और पूर्व दिशा में चन्द्रमण्डल दिखाई दे रहा है। ये दोनों ज्योतिषी देवों के स्वामी हैं, भ्रमणशील हैं एवं निरन्तर सुमेरु पर्वत की प्रदक्षिणा देते हुये घूमते रहते हैं। पहले इनका तेज–प्रकाश (प्रभापुंज) ज्योतिरंग जाति के कल्पवृक्षों से आच्छादित था, इसकारण ये दृष्टिगोचर नहीं थे। अब उनकी प्रभा क्षीण हो जाने से ये दिखाई देने लगे हैं। अब सूर्य के निमित्त से दिन–रात प्रकट होंगे और चन्द्रमा के निमित्त से कृष्णपक्ष व शुक्लपक्ष का व्यवहार चलेगा। दिन में चन्द्रमा सूर्य के तेज से अस्त जैसा हो जाता है, स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं होता और सूर्यास्त के बाद रात को स्पष्ट दिखाई देने लगता है।

प्रतिश्रुत नाम के इन प्रथम कुलकर ने ही भोगभूमि के अंत और कर्मभूमि के प्रारंभ होने से उत्पन्न इन भयों के कारण उत्पन्न राज्य की अव्यवस्था को नियंत्रित करने के लिये हा ! मा !! और धिक् !!! दण्ड की ये तीन धारायें स्थापित कीं। यदि कोई स्वजन या परजन कालदोष से मर्यादा को लांघता था तो उसके साथ अपराधी के अनुरूप इन दण्डों का प्रयोग किया जाता था।

इन्हीं प्रतिश्रुत के कुल में क्रमश: सन्मति, क्षेमंकर, क्षेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विपुलवाहन, चक्षुस्मान्, यशस्वी, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, मरुदेव, प्रसेनजित और अन्तिम चौदहवें कुलकर के रूप में राजा नाभिराय हुये। राजा नाभिराय से ही वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म हुआ। **(क्रमश:)**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(100 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

यहाँ तो जो जीव सम्यग्दर्शन प्रकट करता है – ऐसे जीव को कैसा निमित्त होता है – यह बताया है। अज्ञानी को पूर्व में अनंतबार जो देशना लब्धि मिली है, उस देशनालब्धि की यहाँ बात नहीं है; क्योंकि उपादान बिना निमित्त किसका ?

सत् समझानेवाले जीव के सामने सत् रूप से परिणमित हुआ सम्यग्दृष्टि ही निमित्त होता है। अज्ञानी की वाणी सम्यग्दर्शन का निमित्त नहीं होती है; क्योंकि वह जीव स्वयं सम्यक्त्वरूप से परिणमित नहीं हुआ है। ज्ञानी को तो अपने दर्शनमोह के क्षयादिक हो गये हैं; अत: वह सामनेवाले जीव के सम्यक्त्व परिणाम में निमित्त हो सकता है; इसप्रकार सम्यग्दर्शन परिणाम में बाह्य निमित्त वीतराग की वाणी और अन्तरंग निमित्त जिनके दर्शनमोह का अभाव हुआ है – ऐसे जिनसूत्र के ज्ञाता पुरुष होते हैं।

ज्ञान का स्वभाव स्व–पर प्रकाशक है। परम शुद्ध आत्मतत्त्व की श्रद्धा और ज्ञान होने पर जहाँ स्व–पर प्रकाशक ज्ञानसामर्थ्य खिल गई है, वह ज्ञान ऐसा जानता है कि जीव को सम्यक्त्व परिणमन में सामने निमित्तरूप से भी सम्यग्दृष्टि ही होता है। वास्तव में तो सम्यक्त्व परिणाम प्रकट करनेवाले जीव को तो जिनसूत्र और ज्ञानी – ये दोनों निमित्त बाह्य ही हैं; पर निमित्तरूप से उनमें बाह्य और अंतरंग – ऐसे दो भेद किये हैं। ज्ञानी का आत्मा अन्तरंग निमित्त है और उसकी वाणी बाह्य निमित्त है। एक बार साक्षात् चैतन्यमूर्ति ज्ञानी मिले बिना शास्त्र के कथन का आशय क्या है – यह समझ में नहीं आता है। शास्त्र स्वयं तो कुछ अपने आशय को समझाता नहीं है; अत: वह बाह्य निमित्त है। शास्त्र का आशय तो ज्ञानी के ज्ञान में है। देखो ! वह सम्यग्दृष्टि है। उसे अन्तरंग में दर्शनमोह का क्षय इत्यादि हुआ है; अत: वही अन्तरंग निमित्त है।

जिस पात्र जीव में स्वभाव का अवलम्बन लेने की योग्यता हुई है, शुद्ध कारणपरमात्मा का अवलम्बन लेकर सम्यक्त्व प्रकट करने की तैयारी हुई है – ऐसे जीव के सन्मुख अन्तरंग निमित्तरूप से भी जिन्हें दर्शनमोह के क्षयादिक हो गये हैं, ऐसे जिनसूत्र के ज्ञायक पुरुष ही होते हैं और बाह्य निमित्तरूप से जिनसूत्र होता है। इसमें देशनालब्धि का यह नियम आ जाता है कि प्रथम ज्ञानी पुरुष की देशना ही निमित्तरूप से होती है, अकेला शास्त्र या किसी भी पुरुष की वाणी देशनालब्धि में निमित्त नहीं होती है। देशनालब्धि के लिये एक बार तो साक्षात् चैतन्यमूर्ति ज्ञानी मिलना चाहिये।

यह नियमसार शास्त्र बहुत अलौकिक है और उसकी टीका में भी बहुत अद्भुत भाव खोले गये हैं। इस शुद्धभाव अधिकार की अन्तिम पाँच गाथाओं में रत्नत्रय का स्वरूप बताया है। अपना स्वभाव अनंत चैतन्यशक्ति सम्पन्न भगवान कारणपरमात्मा है, उसके आश्रय से जो सम्यग्दर्शनादि शुद्धभाव प्रकट होते हैं, वे मुक्ति के कारण हैं।

अन्तरंग शुद्ध कारणतत्त्व मेरा आत्मा ही मुझे उपादेय है – ऐसी निर्विकल्प श्रद्धा निश्चय सम्यक्त्व है। उस सम्यक्त्व परिणाम का बाह्य सहकारी कारण जिनसूत्र है। वीतराग–सर्वज्ञदेव के मुखकमल में से निकली हुई और समस्त पदार्थों के स्वरूप को कहने में समर्थ ऐसी वाणी उस सम्यक्त्व परिणाम का बाह्य निमित्त है ।

पर वह वाणी किसके पास से सुनना चाहिये ?

ज्ञानी के पास से ही वह वाणी सुनी जानी चाहिये – यह बताने के लिये यहाँ अन्तरंग निमित्त की खास बात डाली है कि जो मुमुक्षु हैं – ऐसे धर्मी जीव भी उपचार से पदार्थनिर्णय के हेतु होने के कारण सम्यक्त्व के अन्तरंग निमित्त हैं; क्योंकि उनके दर्शनमोह का क्षयादिक हो गया है। शास्त्र की अपेक्षा धर्मी जीव की आत्मा मुख्य निमित्त है – यह बताने के लिये यहाँ उन्हें अन्तरंग हेतु कहा है। सम्यग्दर्शन में धर्मी जीव की वाणी तो बाह्य निमित्तकारण है और सम्यग्दर्शनादिरूप से परिणमित हुआ उनका आत्मा अंतरंग निमित्तकारण है।

शुद्धात्मस्वभाव की रुचि से अपूर्व सम्यग्दर्शन प्रकट करनेवाले जीव को अकेली वीतराग की वाणी ही निमित्त नहीं होती; परन्तु सम्यग्दर्शन–ज्ञान आदि रूप से परिणमित हुये धर्मी जीव भी निमित्तरूप से होते ही हैं; अत: निमित्तरूप से वे अन्तरंग हेतु हैं। पर इस आत्मा की अपेक्षा से तो वे भी बाह्य कारण ही हैं ; फिर भी सम्पूर्णतया आत्मा पर उनका वजन बताने के लिये ही उन्हें अंतरंग हेतु कहा है। भाई ! सम्यक्त्व का वास्तविक अंतरंग कारण तो अपना शुद्ध कारणपरमात्मा ही है, उसकी अपेक्षा से तो ज्ञानी और वाणी दोनों ही बाह्य हेतु हैं। सम्यक्त्व के परमार्थ कारण का तो पहले बहुत वर्णन किया ही है, यहाँ तो उसके निमित्त की बात चलती है। निमित्त में अंतरंग और बाह्य ऐसे दो प्रकार कहकर यहाँ ज्ञानी के आत्मा को मुख्य हेतुरूप से बताया गया है।

यहाँ अंतरंग हेतुरूप से मुमुक्षुओं को लिया है; क्योंकि आज साक्षात् केवली भगवान तो हैं नहीं; वीतराग की वाणी आज तो मुमुक्षुओं अर्थात् कि चौथे, पाँचवें, छठवें गुणस्थानवर्ती धर्मात्माओं के पास से मिलती है; अत: उपचार से उन मुमुक्षुओं को अंतरंग हेतु कहा है। उन मुमुक्षुओं को अपने अन्तर में दर्शनमोह का क्षय इत्यादि वर्तता है; अत: वे सम्यक्त्व के अंतरंग हेतु हैं। जिसे दर्शनमोह नहीं टला हो – ऐसा मिथ्यादृष्टि जीव सम्यक्त्व का निमित्त नहीं होता है।

सामने स्थित ज्ञानी भी इस आत्मा से तो बाह्य ही हैं; अत: वह उपचार से हेतु है और वाणी की अपेक्षा उसकी आत्मा का अभिप्राय मुख्य निमित्त है – यह बताने के लिये उसे उपचार से अंतरंग हेतु कहा है। धर्मी जीव का अंतरंग अभिप्राय क्या है। यह समझकर स्वयं अपने में वैसा अभिप्राय प्रकट करके सम्यग्दर्शन प्राप्त करने में ज्ञानी अंतरंग निमित्तकारण है और वाणी बाह्य कारण है। ये दोनों कारण व्यवहार से ही हैं। निश्चय कारण तो अपना शुद्ध कारण परमात्मा ही है। जब उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन प्रकट करता है, तब निमित्त कैसा होता है – यह बात यहाँ बताई गई है। **(क्रमश:)**

पारसदास जैन को साहू श्री अशोक जैन स्मृति पुरस्कार

नई दिल्ली : राष्ट्रसंत आचार्यश्री विद्यानंदजी मुनिराज के पावन सान्निध्य में 22 अप्रैल 2002 को परेड मैदान के वैशाली मण्डप में आयोजित ऐतिहासिक एवं भव्य समारोह में देश के वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रमुख समाजसेवी श्री पारसदास जैन को उनकी अनन्य सामाजिक सेवाओं के लिये समाज के शीर्ष नेता साहू श्री अशोककुमार जैन की पुण्यस्मृति में दिगम्बर जैन समाज बड़ौत द्वारा स्थापित वर्ष 2000 का 'साहू श्री अशोक जैन स्मृति पुरस्कार' प्रदान किया गया।

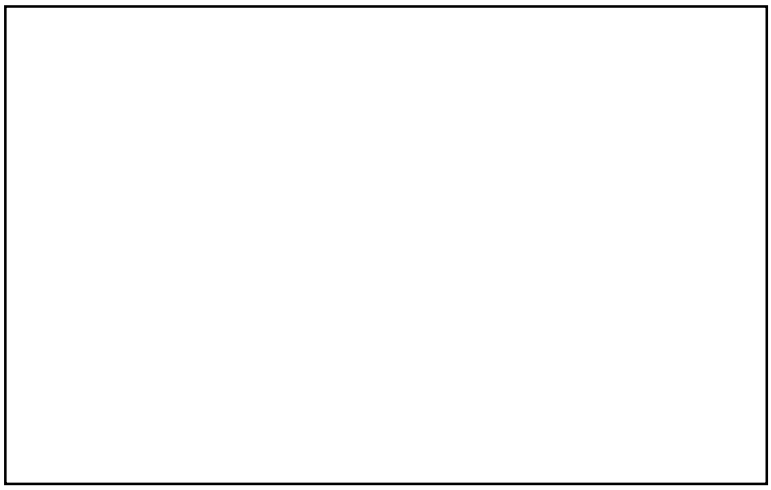

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल श्री पारसदासजी का माल्यार्पण करते हुये

इस अवसर पर आचार्य श्री ने अपने आशीर्वचन में कहा कि पारसदासजी ने साहू शान्तिप्रसादजी, रमाजी एवं श्रेयांसप्रसादजी के साथ कार्य करते हुये जैनधर्म की प्रभावना में बहुत बड़ा योगदान दिया। अशोकजी इन्हें मित्र मानते थे। इन्होंने साहित्य, समाज और धर्म की महान सेवा की है। समाज इनकी सेवा भुला नहीं सकता।

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल जयपुर ने उनके द्वारा समाज की एकता के लिये किये गये प्रयासों की भूरि-भूरि सराहना की।

पुरस्कार समिति के अध्यक्ष श्री सुकुमालचन्द जैन ने उन्हें माल्यार्पण, साहू श्री रमेशचन्द जैन ने शॉल, समारोह के अध्यक्ष दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति श्री विजेन्द्र जैन ने प्रशस्ति-पत्र, श्री फल एवं 1 लाख रुपये की राशि प्रदान की। उन्हें स्वर्ण-पदक पहनाकर 'श्रावक शिरोमणी' की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। समारोह का विद्वत्तापूर्ण संचालन करते हुये डॉ. सुदीप जैन ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया।

बाल शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

1. कुराबड़ (उदयपुर) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा दिनांक 23 अप्रैल से 28 अप्रैल 2002 तक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित आशीषकुमारजी शास्त्री टीकमगढ़ के प्रात: रत्नकरण्डश्रावकचार पर एवं सायंकाल भगवान महावीर के 2601 वें जन्मजयन्ती के प्रसंग पर महावीराष्टक पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

इसके अतिरिक्त पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली द्वारा बालकक्षा व सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। शिविर के दौरान 26 अप्रैल को युवा फैडरेशन का पुनर्गठन हुआ। जिसमें अध्यक्ष श्री महावीरलालजी, मंत्री श्री जीवनलालजी कुरावत, सांस्कृतिक कार्यक्रम के संयोजक श्री सिद्धकुमार, सह-संयोजक श्री पंकज जैन एवं प्रभारी श्री ललित जैन को बनाया गया। **- जीवनलाल कुरावत**

2. उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ क्षीरसागर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं कुन्दकुन्द कहान प्रवचन प्रसारण संस्थान के संयोजन में दिनांक 30 अप्रैल से 5 मई 2002 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित विमलकुमारजी झांझरी एवं पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी के विभिन्न विषयों पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

इसके अतिरिक्त पण्डित अजितकुमारजी अलवर, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित सुधाकर शास्त्री इंडी, पण्डित संतोष साहुजी, पण्डित सुकमालजी, ब्र. पुष्पलताजी एवं ब्र. समताजी ने कक्षायें चलाईं। रात्रि में रंगारंग धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। **- अरहंतप्रकाश झांझरी**

बाल शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन सीनियर हा.सै. स्कूल, सी-स्कीम में कक्षा 6 से 8 के बालकों को नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देने हेतु श्रीमती कौशल्यादेवी जैन मैमोरियल मोरल एज्यूकेशन फण्ड के सौजन्य से 6 से 13 मई 2002 तक एक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया ।

शिविर का उद्घाटन 6 मई को स्कूल प्रांगण में लोकप्रिय विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर ने किया । उनके साथ श्री नरेशकुमारजी सेठी, श्री राजकुमारजी काला, श्री बी.एल. गोदीका एवं श्रीमती रमा दत्त भी मंचासीन थीं।

शिविर में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित अनंतकुमारजी विश्वंभर, पण्डित विजयजी कालेगोरे एवं पण्डित विवेकजी सातपुते द्वारा बालबोध पाठमाला भाग 2 व 3 तथा वीतराग-विज्ञान भाग-1 के माध्यम से बालकों को नैतिक जीवन का ज्ञान कराया गया।

शिविर के दौरान शिक्षण कक्षाओं के पूर्व प्रतिदिन क्रमश: डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, श्री मदनलालजी जैन, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, श्री नवीनजी बज, श्री निरंजनलालजी मिश्र, डॉ. पी. डी. शर्मा, श्री एन.के. सेठी एवं प्रो. रमेशजी अरोड़ा ने बालकों को नैतिक एवं धार्मिक जीवन जीते हुये अपने व्यक्तित्व का विकास करने की प्रेरणा दी।

दिनांक 13 मई 2002 को समापन समारोह की अध्यक्षता शिक्षाविद् माननीय श्री तेजकरणजी डंडिया ने की। इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्रीमान नगेन्द्रकुमारजी जैन उपस्थित थे। साथ ही श्री नरेशकुमारजी सेठी, श्री राजकुमारजी काला, श्री बी. एल. गोदीका एवं श्रीमती रमा दत्ता भी मंचासीन थीं।

अन्त में शिविर प्रभारी श्रीमती रमा जैन ने शिविर की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला ।

पाठशाला निरीक्षण सानन्द सम्पन्न

महिदपुर : यहाँ पाठशाला निरीक्षण हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर से पण्डित सुधाकर शास्त्री एवं पण्डित संतोष शास्त्री पधारे, जिन्होंने 27 से 30 अप्रैल तक बालबोध पाठमाला भाग- 1 की कक्षा ली। 30 अप्रैल को शान्ति विधान आयोजित किया, जिसमें स्थानीय विद्वान श्री सतीशजी कासलीवाल एवं श्री शान्तिलालजी सौगानी भी उपस्थित थे। स्मारक से पधारे विद्वानद्वय ने पाठशाला को पुनर्जीवित करने के लिये प्रेरणा दी। प्रतिदिन प्रवचन, पूजन व भक्ति का आयोजन हुआ।

आचार्य कुन्दकुन्द ज्ञान पहेली क्र. 5

न	न्द	ल्पा	तो	उ	ता	ठ	भो	हिं	मी
र	र्म	आ	शि	प	आ	ष	ग	द	स्वा
क	र	णा	नु	यो	ग	शु	तृ	म	म्बू
झु	ट	शि	ति	ग	अ	स्ति	त्व	झु	ज
ना	त	चे	श्य	नु	पू	नु	ल्पा	क	र्य
गी	हिं	ज्य	यो	ती	र्व	ज्ञ	प्रे	चा	ए
सा	वी	ग	न	र्ण	क	धि	आ	क्षा	र
र्श	ल	ज्ञा	ना	व	र	ण	र	यि	वी
न	ति	हिं	धु	सु	ण	म	त्र	क	हा
म	ना	द्य	म	सं	नि	य	म	ल्य	म

प्रश्न –

1. एक गति (3)
2. ज्ञान-दर्शन का व्यापार (4)
3. ज्ञान के भेद (2)
4. धर्म के लक्षण (2)
5. एक अनुयोग (6)
6. दो बुद्धियाँ (4,3)
7. जीव की अवस्था विशेष (2)
8. शास्त्र की कथनपद्धति (4)
9. एक गुणस्थान (4)
10. बार-बार चिन्तन (4)
11. एक सामान्य गुण (3)
12. एक केवली (4)
13. वर्द्धमान के नाना (3)
14. जीव का लक्षण (3)
15. एक पाप (2)
16. एक इन्द्रिय (2)
17. एक परमेष्ठी (3)
18. एक सम्यक्त्व (3)
19. एक कर्म (5)
20. पुद्गल का एक लक्षण (2)
21. एक राजा (2)
22. एक ज्ञान (4)
23. अनिन्द्रिय (2)
24. एक कर्म (2)
25. श्रावक के लिये दो का त्याग (2,2)
26. व्रत के प्रकार (3,2)

नोट – अक्षरों को ऊपर, नीचे, दायें, बायें, तिरछा करके उत्तर खोजिये तथा उत्तर निर्देशों के अनुसार चार्ट बनाकर भेजिये। उदाहरण – **1.** भगवान महावीर को किस पर्याय में तीर्थंकरप्रकृति का बंध हुआ ? नन्द। **2.** आठ भेदोंवाला – कर्म

निर्देश : 1. सभी उत्तर सादे पोस्टकार्ड अथवा कागज पर ही भेजिये, कृपया जैनपथप्रदर्शक को काटकर नहीं भेजें। **2.** पहेली का हल भेजने की अन्तिम तिथि 20 जून 2002 है। **3.** प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमश: 101 रुपये, 75 रुपये, 51 रुपये के हैं एवं 25-25 रुपये के 3 सांत्वना पुरस्कार भी हैं।

पता – कुन्दकुन्द ज्ञान पहेली, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.) **– प्रस्तुति : महावीर मांगुलकर, कारंजा**

विधान एवं शिविर सानन्द सम्पन्न

देवलाली (नासिक) : यहाँ कहान नगर देवलाली के विशाल प्रांगण में बने भव्य जिनालयों में पूज्यश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के संयोजन में एवं श्रीमती ज्योत्स्नाबेन महेन्द्रभाई एम. भालाणी परिवार माटुंगा, मुम्बई के प्रमुख आयोजकत्व में श्री परमात्मप्रकाश मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा के मोक्षमार्गप्रकाशक पर, डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल के समयसार गाथा-186 पर, पण्डित बजूभाईजी अजमेरा के समयसार के प्रथम कलश पर एवं डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री विदिशा के परमात्मप्रकाश की महत्त्वपूर्ण गाथाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके अलावा पण्डित यशवंतजी शास्त्री ने नयचक्र की कक्षा ली।

25 मार्च 2002 को पूज्य बेनश्री शान्ताबेन का 93 वाँ जन्मोत्सव वर्ष उनकी गुणानुवाद सभा के रूप में मनाया गया, जिसमें सभी विद्वानों के मार्मिक उद्बोधन के साथ-साथ श्री मुकुन्दभाई खारा, श्री कान्तिभाई मोटाणी, श्री बसन्तभाई दोशी, ब्र. रमाबेन आदि ने शान्ताबेन के प्रति भावांजली प्रकट की। सम्पूर्ण कार्यक्रम में 300 से अधिक साधर्मीजनों ने भाग लिया।

पाठकों के पत्र

1. मलकापुर से कुसुमबेन व चन्दनबेन लिखती हैं कि पण्डितजी आपने जो आचार्य श्री वादीभसिंह सूरि कृत क्षत्रचूड़ामणि का प्रकाशन किया सो हमें बहुत खुशी हुई। इस जीवन्धरचरित्र में अद्भुत नीतिवाक्य लिखे हैं और उनका चरित्र पुण्य-पाप की असारता आदि का वर्णन पढ़कर मन इतना वैराग्य से ओतप्रोत हो गया कि हमनें 50 पुस्तकें मंगाई और घर-घर साधर्मीजनों को पहुँचाई। यहाँ मन्दिर में भी इसका सामूहिक स्वाध्याय चल रहा है। इस जीवन्धरचरित्र से हम इतने प्रभावित हुये कि वह हमारे हृदय का हार बन गया है। पण्डितजी आपने महान सातिशय पुण्य का काम किया जो परंपरा मुक्ति का कारण है। इस चरित्र में चारों अनुयोगों का वर्णन है और आपने विशेषार्थ लिखकर मानों गागर में सागर भर दिया है। ऐसा लगता है कि अपने आत्मप्रदेश में इसका एक-एक नीतिवाक्य लिख लूँ, जिससे जीवन में आपत्तियाँ आईं तो भी सहज रीति से तत्त्वज्ञान के बल पर उनका निराकरण करके सदा के लिये सुखी हो जाऊँ।

2. इन्दौर से श्री तेजकुमार गंगवाल लिखते हैं कि कहान संदेश में मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान के नाम से स्वामीजी के आत्मकल्याणकारक उद्बोधन पढ़ने में आते हैं। यह तो आत्मा को भोजन प्राप्त होने जैसा है। समयसार का सार ! डॉ. साहब ने जो प्राप्त किया है, वह पढ़ने में आ रहा है। जैसे आत्मानुभव तो बाद में होगा पहले दृढ़ श्रद्धान चाहिये। जैसे कोई व्यक्ति ऑफिस में नौकरी कर रहा है, 25 हजार वेतन मिल रहा है एवं इसके साथ...। आत्मानुभव करना है तो सबसे नाता तोड़ना होगा। आजतक पर में कर्तृत्व का अभ्यास है..। जब मैं मुरैना में अध्ययन करता था..। कहने का मतलब है कि डॉ. साहब बहुत ही महत्त्वपूर्ण विषय को सम्पादित-लिख रहे हैं।

हरिवंशपुराण अनुशीलन क्षत्रचूड़ामणी की तरह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बने – यही भावना है। मैं अपने प्रवचनों में इन सबका उपयोग करता रहता हूँ। प्रत्येक आत्मा के हित की बात है। प्रथमानुयोग पर आपकी कलम गहराई को छूये – यही भावना है।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 47

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

बारहवाँ प्रवचन

आस्रव अधिकार में 'आस्रवों के भेद–प्रभेद में न जाकर भोगों का संयोग होने पर भी सम्यग्दृष्टि धर्मात्माओं को कर्मों का आस्रव नहीं होता है।' इस बिन्दु को बहुत विस्तार से स्पष्ट किया है। इसे समझने के लिए हमें कर्मबंध की, आस्रव की प्रक्रिया को समझना अत्यंत आवश्यक है।

महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में आस्रवों का वर्णन करते हुए आचार्य उमास्वामी लिखते हैं कि – 'मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमाद कषाययोगाबंधहेतवः' अर्थात् मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग बंध के हेतु अर्थात् आस्रवभाव हैं। कर्मों का आस्रव इन पाँच कारणों से होता है। ये पाँच भाव किस कर्म के उदय से उत्पन्न होते हैं – ये जानना भी अत्यंत आवश्यक है।

मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय कर्म के उदय से होता है अर्थात् मिथ्यात्व में दर्शनमोहनीय कर्म का उदय निमित्त है और अविरति, प्रमाद और कषाय में चारित्रमोहनीय कर्म का उदय निमित्त है। मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद और कषाय – ये चारों बंध के प्रमुख कारण हैं। योग तो ऐसा कारण है, जो तेरहवें गुणस्थान में वीतरागी सर्वज्ञ भगवान के भी होता है। इस योग से जो आस्रव होता है, वह एक समय का होता है, वह एक समय में ही आकर खिर जाता है; इसे ईर्यापथ आस्रव कहते हैं। अनंत संसार को बढ़ानेवाला जो साम्परायिक आस्रव है, वह योगों से नहीं होता है। योगों की हम यहाँ थोड़ी उपेक्षा करें, तो अन्य चार जो आस्रव के मुख्यकारण हैं, उसमें एक दर्शनमोहनीय एवं अन्य तीन चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से हुए। मोहनीय कर्म को छोड़कर जो अन्य सात कर्म हैं, उनका उदय आस्रव के कारणों में नहीं है, इसे तर्क–युक्ति से सिद्ध किया जा चुका है। इस प्रकरण में हम इसे आगम से सिद्ध कर रहे हैं।

आगम में भी आस्रव के कारणों में इन्हीं को गिनाया गया है और ये भाव सिर्फ मोहनीय कर्म के उदय में होते हैं। इसका आशय यह है कि मोहनीय को छोड़कर शेष सात कर्मों के उदय के कारण कर्मों की संतति आगे चलनेवाली नहीं है, इनका वंश तो यहाँ ही समाप्त होनेवाला है। इनके बारे में पूर्व में ही कहा था कि ये हमारे पास मात्र सत्ता में पड़े हैं। जो कर्म सत्ता में पड़े हैं; उन्हीं के विचार से हम आकुलित–व्याकुलित होते हैं। उन सात कर्मों में से आगामी कर्मबंध का कारण एक भी नहीं बनेगा; न निमित्त बनेगा, न उपादान बनेगा। ये सात कर्म जब भी बंधते हैं, तब निमित्तरूप से भी कुछ फल नहीं देते हैं और जबतक सत्ता में रहते हैं, तब भी फल नहीं देते हैं। जब उदय में आयें, तब फल का प्रश्न उपस्थित हो सकता है। ये कर्म सत्ता में तो लाखों वर्ष रहते हैं; लेकिन उदय में मात्र एक समय को ही आते हैं। कर्म का एक निषेक एक ही समय में उदय में आयेगा और फिर दूसरे समय में दूसरा और तीसरे समय में तीसरा। इसप्रकार की स्थिति अनंतकालतक बनी रहेगी; लेकिन जो कर्म अभी बंधा है, उसकी स्थिति बंधी है, वह उदय में आता है तो एक ही समय में खिर जाता है और जो फल देने की अपेक्षा है वह उदय के काल की अपेक्षा है।

अब एक मोहनीय कर्म शेष रहता है। जो कर्म सत्ता में है, वह जबतक उदय में नहीं आता; तबतक असर नहीं करता। बंध के काल में नहीं, सत्ता के काल में नहीं, सिर्फ उदय के काल में ही असर दिखाता है। यह प्रभाव भी वह कर्त्ता के रूप से नहीं; अपितु निमित्तरूप में ही दिखाता है।

आशय यह है कि हमारा यह शत्रु कितना कमजोर है – यदि यह पता चले तो हमारी हिम्मत बढ़े; परन्तु आजतक हमने कर्म के इतने गीत गाए हैं कि उससे हमारी हिम्मत पस्त हो गई है –

ऐसे कर्म बड़े बलवान जगत में पेरत हैं।।टेक।।
पवनंजय की रानी अंजना गर्भ विषैं हनुमान।
सगी सास ने दियो निकारो किस विधि राखो प्राण।।1।।
जगत में पेरत हैं, ऐसे कर्म बड़े बलवान जगत में पेरत हैं।।

इसप्रकार हमने कर्मों के बहुत गीत गाए और सुने भी हैं। इससे कर्मों की महिमा बहुत बढ़ गई और प्राप्तव्य आत्मा की महिमा घट गई। कर्मों ने आदिनाथ को नहीं छोड़ा, कर्मों ने पार्श्वनाथ को नहीं छोड़ा; पार्श्वनाथ पर पत्थर बरसाए और आदिनाथ को एक वर्ष तक आहार नहीं मिला – ऐसे कथन सुनकर हमारा हृदय कमजोर हो गया है।

लेकिन क्या कर्मों ने आदिनाथ को नहीं छोड़ा है ? क्या कर्मों ने पार्श्वनाथ को नहीं छोड़ा ? यदि उन्हें कर्म नहीं छोड़ते तो वे आज संसार में होते, मोक्ष कैसे चले गए ?

कितना परमसत्य है कि आदिनाथ से महावीर तक सभी तीर्थंकरों को कर्मों ने छोड़ दिया है अथवा इन तीर्थंकरों ने कर्मों को तोड़ दिया है। कर्म की जंजीरें तोड़कर वे तीर्थंकर मुक्त हुए; लेकिन फिर भी हमारा यही पूर्वाग्रह रहता है कि 'कर्मों ने नहीं छोड़ा' और यही सबको जँचता है; क्योंकि वे याद करते हैं कि 'आदिनाथ को आहार नहीं मिला था, पार्श्वनाथ पर पत्थर बरसे थे।' लेकिन मैं पूछता हूँ कि युद्ध का निर्णय अंतिम दृश्य से होता है या मध्यकाल के दृश्य से ? वह तो मध्य का छोटा सा दृश्य था। कर्म के उदय से जब पार्श्वनाथ के ऊपर पत्थर बरस रहे थे, उसके आधे घंटे पश्चात् चार घातिया कर्मों का महल भर–भराकर गिर गया था और अघातिया कर्म भी निरर्थक से

हो गये थे। तुरंत समवशरण की रचना हुई और अनंत सुख प्रकट हो गया; फिर भी अभी भी यही कहा जाता है कि कर्मों ने नहीं छोड़ा। हमें मात्र इतना ही याद है। अरे भाई ! जब कर्म का उदय आ रहा था और उपसर्ग हो रहा था; इसके पश्चात् क्या हुआ ? यह कहानी भी विस्मृत नहीं होना चाहिए।

इसी प्रकरण के सन्दर्भ में यह बात स्पष्ट करना भी अनुचित नहीं है कि हम पार्श्वनाथ की उपसर्ग के समय की सांप के फनवाली एवं धरणेन्द्र पद्मावती वाले पार्श्वनाथ की मूर्ति को विराजमान करके भगवान पार्श्वनाथ को कम, कर्म की बलवत्ता को अधिक याद करते हैं। धरणेन्द्र–पद्मावती पार्श्वनाथ की रक्षा कर रहे हैं; क्या यह पार्श्वनाथ का सबसे बढ़िया समय था। क्या यह उनकी दिग्विजय का दृश्य था ? हमारा फोटो यदि घर में लगाना हो या किताब में छपाना हो, तो वह फोटो छपाते हैं, जिसमें हमारा सम्मान हो रहा है; न कि पिटाईवाले फोटो को।

इससे यह नहीं कहा जा रहा कि फणवाली पार्श्वनाथ की मूर्ति अपूज्य है; लेकिन विचार यह आता है कि हमने ऐसे चित्र क्यों पसंद किए ? क्या यह पार्श्वनाथ के जीत का दृश्य है ? इसके आधे घण्टे पश्चात् वे जीत गए और अष्ट प्रातिहार्य से युक्त हो गए, क्या यह दृश्य हमें पसंद नहीं आता ? उपसर्ग न तो पुण्योदय से होता है और न ही धर्म करने से। वह धर्म का कार्य नहीं था, उन्होंने पूर्व में कोई पाप किया होगा, उसी का वह फल था।

यदि हमारे चेहरे पर सफेद दाग हो जाता है और हमें चित्रकार से स्वयं का फोटो बनवाना हो तो क्या वह दाग भी साथ में बनवायेंगे ? वह दाग भी तो पापकर्म के उदय का परिणाम है – ऐसे ही पार्श्वनाथ के ऊपर आपतित उपसर्ग भी पूर्व में बांधे हुए पापकर्म का ही परिणाम है।

उन्होंने पूर्व में जो भाव करके इस कर्म को बांधा होगा; वही परिणाम उदय में आया है। धीरे–धीरे यह घटना इतनी प्रचलित हो गई कि यह फण पार्श्वनाथ का चिन्ह हो गया है।

आज ऐसे भी लोग हैं जो बिना फण की पार्श्वनाथ की मूर्ति को पार्श्वनाथ की मूर्ति मानने के लिए तैयार नहीं हैं। यदि हम कहते हैं कि यह पार्श्वनाथ की मूर्ति है, तब वे पूछते हैं कि इसका फण कहाँ है ?

यहाँ प्रश्न है कि यदि फण नहीं तो फिर पार्श्वनाथ का चिन्ह क्या है ? पार्श्वनाथ का चिन्ह तो सर्प ही है; किन्तु चिन्ह को जहाँ चिन्ह होता है, वहाँ होना चाहिए न ! चिन्ह आसन पर होना चाहिए न कि माथे पर। भगवान महावीर की मूर्ति पर जहाँ सिंह का चिन्ह होता है; वहीं पार्श्वनाथ की मूर्ति पर सर्प का चिन्ह होना चाहिए।

यहाँ पार्श्वनाथ की मूर्ति का विरोध नहीं है, पार्श्वनाथ की मूर्ति का विरोध तो वह करता है, जो बिना फणवाली मूर्ति को पार्श्वनाथ की मूर्ति मानने के लिए तैयार नहीं है। हम तो फणवाली पार्श्वनाथ की मूर्ति को भी मानते है और बिना फणवाली पार्श्वनाथ की मूर्ति को भी; लेकिन इस मन्तव्य पर इतना तो विचार हो ही सकता है कि दोनों में से श्रेष्ठ कौन है ? लेकिन दोनों चित्रों में से किसी एक चित्र को हमें चुनना है तो हम किस चित्र को चुनेंगे ? हमारे गले में मालायें पड़ती हैं, उस चित्र को चुनना श्रेष्ठ है या हमारे ऊपर लाठियाँ बरसायी जाती है, उस चित्र को ? क्योंकि पुण्य–पाप के उदय के अनुसार दोनों ही स्थितियाँ सम्भव हैं।

आस्रव कितना कमजोर है, जरा विचार तो कीजिए ! आजतक हमने कर्मों के ही गीत गाए हैं कि कर्म कितना बलवान है ? लेकिन क्या इस पर भी विचार किया है कि जब वह बंधा था, तब उसने कुछ नहीं किया।

'जब कर्म बंधते हैं, तब भी फल नहीं देते और जब सत्ता में पड़े रहते हैं, तब भी फल नहीं देते। यह तो ठीक, पर यह भी तो बताओ कि जब उदय में आते हैं' तब फल देते हैं कि नहीं ?

इस प्रश्न का उत्तर आस्रव अधिकार में आचार्य देते हैं कि – 'वे कर्म जब उदय में आते हैं, तब उपयोग के प्रयोगानुसार फल देते हैं।'

'उपयोग के प्रयोगानुसार फल' – का आशय यह है कि जब वह कर्म उदय में आए और तुम्हारा उपयोग यदि आत्मा में हो तो उस कर्म के फल का संयोग तो होगा; किन्तु उसमें रंजायमान न होने से कर्मबंध नहीं होगा। जैसे कि नामकर्म का उदय हुआ तो गोरा–काला शरीर होगा, सुस्वर–दुःस्वर भी होगा, वह संयोग तो होगा; लेकिन उपयोग यदि कर्म के उदयस्वरूप संयोग में नहीं होगा, तो इसका उपभोगरूप और बंधरूप फल हमें नहीं मिलता है; क्योंकि हम स्वयं तो आत्मा में मग्न है।

जैसे गला चाहे जैसा रहे, हमें बोलना ही नहीं है तो सुस्वर और दुःस्वर से कुछ अंतर ही नहीं होता।

यदि हमारे सुस्वर नामकर्म का उदय होता तो क्या होता ? पण्डित से गवैये बनते। इसमें क्या अच्छा है ? पण्डित बनना या गवैये ? प्रवचनकार से पूजनकार होते। यदि गला बढ़िया होता है तो भगवान के गीत गाते; और यदि दुःस्वर है तो भगवान ने जो कहा है, वह सुनाते हैं। तो कहिए कि दुःस्वर पुण्योदय से मिलता है या पापोदय से ? यह तो तेरे अनुभव पर है कि तू इसे इष्ट मान रहा है या अनिष्ट ? जिसमें अनुकूलता का वेदन हो वह इष्ट है, सुख है और जिसमें प्रतिकूलता का वेदन हो वह अनिष्ट है, दुःख है – ये दोनों क्रमशः पुण्य–पाप के उदय से हैं और इसमें यदि वेदन नहीं होता है तो वह कर्म फल दिए बिना ही खिर जाता है। (Øe'k%)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

1. जबलपुर : श्री वीतराग-विज्ञान मण्डल जबलपुर के संयोजकत्व में श्री बाबूलाल रजनेशकुमारजी रूपाली परिवार द्वारा दिनांक 22 अप्रैल से 30 अप्रैल 2002 तक आयोजित श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान अभूतपूर्व धर्मप्रभावना के साथ संपन्न हुआ। स्थानीय श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर बड़ा फुहारा में आयोजित इस विधान का शुभारंभ श्रीमती छाया चौधरी के कर कमलों से झण्डारोहण के माध्यम से हुआ। इसके पश्चात् रूपाली परिवार द्वारा मंगल कलश की स्थापना की गई।

इस अवसर पर आगरा से पधारे पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के प्रात: समयसार की 412वीं गाथा पर एवं दोपहर व रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक के निश्चयाभासी प्रकरण पर अत्यन्त सारगर्भित प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री जेवर द्वारा भगवान महावीरस्वामी की जन्म जयन्ती के पावन प्रसंग पर भगवान महावीर के 32 पूर्व भवों का दिग्दर्शन 4 व्याख्यानों के माध्यम से कराया गया।

साथ ही पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर के प्रवचनों का भी लाभ मिला। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित विराग शास्त्री, श्री मनोज जैन एवं श्री श्रेणिक जैन ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर लोकप्रिय गायक श्री नन्दकुमारजी जैन 'नन्दू' के भजनों का लाभ प्रतिदिन उपस्थित समाज को मिला। रात्रि में श्री श्रेयांस शास्त्री एवं श्री स्वतंत्र शास्त्री ने सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न कराये। समापन समारोह में स्थानीय विद्वान पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन ने स्वरचित कविताओं के माध्यम से विधान के सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। सभी कार्यक्रमों में स्थानीय फैडरेशन के सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा। **- विराग शास्त्री**

2. कंपिलजी (अतिशयक्षेत्र) : यहाँ दिनांक 28 अप्रैल से 5 मई 2002 तक श्रीमान प्रमोदशरणजी जैन परिवार कायमगंज द्वारा श्री सिद्धचक्रमण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर पं.प्रकाशचन्दजी मैनपुरी, पं. महेशचन्दजी कानपुर, पं. नवीनजी शास्त्री फिरोजाबाद, पं. अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, पं. सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद के व्याख्यानों और कक्षाओं का लाभ मिला। विधि-विधान के कार्य पं. अनिलजी धवल, पं. सुनीलजी धवल भोपाल एवं पं. अभिनय शास्त्री जबलपुर ने सम्पन्न कराये। इस प्रसंग पर 4 हजार रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।सभी कार्यक्रम डॉ.योगेशचन्द्रजी शास्त्री अलीगंज के कुशल संचालन में हुये। **- प्रभाकर जैन**

स्थापना दिवस सानन्द सम्पन्न

खेकड़ा (बागपत) : भगवान महावीर के 2600 वें जन्मकल्याणक वर्ष की महत्त्वपूर्ण बेला एवं भगवान चन्द्रप्रभ के ज्ञानकल्याणक के पावन प्रसंग पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तेरहपंथ स्वाध्याय भवन ट्रस्ट खेकड़ा के संयोजकत्व में चैत्रशुक्ला पूर्णिमा शनिवार, दिनांक 27 अप्रैल 2002 को श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर खेकड़ा का प्रथम स्थापना दिवस एवं वार्षिक रथयात्रा महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर पं. राकेशजी शास्त्री लोनी, पं. संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, पं. अमितजी शास्त्री फुटेरा एवं पं. गणतंत्रजी शास्त्री जयपुर ने श्री महावीर पंचकल्याणक विधान शुद्धाम्नाय से सम्पन्न कराया। **- जिनेन्द्रकुमार जैन**

उपकार दिवस सानन्द सम्पन्न

दिल्ली : यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 113वीं जन्मजयन्ती रविवार, दिनांक 5 मई 2002 को भव्य समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। श्री शान्तिलालजी सेठिया परिवार द्वारा गुरुदेवश्री के चित्र का अनावरण, श्री नरेशजी लुहाड़िया द्वारा विनयांजली सभा के मंच का उद्घाटन, श्री अरुणकुमारजी जैन नारायणा बिहार द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं श्री विमलकुमारजी जैन, श्री अजितप्रसादजी जैन ने आगत विशिष्ट अतिथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर ने बताया कि पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की शास्त्रसभा में गाँधीजी उनका प्रवचन सुनकर इतना प्रभावित हुये कि बाद में उनके परमशिष्य रामजी भाई एडवोकेट के माध्यम से उनसे व्यक्तिगतरूप से मिलने गये।

इस प्रसंग पर बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित प्रकाशचन्दजी 'हितैषी' दिल्ली एवं डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली ने भी गुरुदेवश्री के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

विनयांजलि सभा की अध्यक्षता करते हुये न्यायमूर्ति श्री विजेन्द्र जैन ने कहा कि कानजीस्वामी सोनगढ़ के सन्त न होकर राष्ट्र संत थे। सांसद डॉ. साहिबसिंह वर्मा ने आत्मार्थी ट्रस्ट की सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों की प्रशंसा करते हुये मंदिरजी के सामने नीलवाल रोड पर सोडियम लाईटें लगवाने की घोषणा की। श्री अजितप्रसाद जैन राजपुर रोड ने सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री ने किया। **- आदीश जैन**

वैराग्य समाचार

श्री हीरालाल (भाऊसाहेब) आमीचन्द गांधी, सोलापुर का बुधवार दिनांक 24 अप्रैल 2002 को निधन हो गया है। आप अत्यन्त स्वाध्यायी एवं धर्मप्रेमी व्यक्ति थे। गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को महाराष्ट्र में प्रचारित करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। मृत्युसमय भी आप शांत, विरक्त एवं स्थिर रहे।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही मंगल कामना है।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मई (द्वितीय) 2002
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127